अर्थवर्म
मेरा नाम

दिनेश चमोला 'शैलेश'

'अर्थवर्म' या कि कहो केंचुआ मित्रों! मेरा नाम।
डॉक्टर-सा गुपचुप यूं भीतर, करता हूँ मैं काम।।
वैसे तो मैं मिल जाता हर
बाग, खेत, खलिहान में
नित्य बढ़ाता भू उर्वरता
मैं धरती का हूँ भगवान।
अगर मैं न होऊँ, तो धरती बेबस
झेले कितने रोग, अजीर्ण
पादप उपज स्वयं धरती भी
बिन मेरे हैं जीर्ण-शीर्ण
कालांतर से, हरित धरा हो, सोचूं, करता काम।
मेरे बिन भू का हो जाता, मित्रों! काम तमाम।।
किंचित रुग्ण रहे जो धरती
हो जाती वीरान
जीव-जंतु क्या, बहुत दुखी फिर
हों देव, स्वयं इन्सान।
अपनी कारिस्तानी से फिर
हरूं धरा का ताप
विषाक्त तत्व को फिल्टर कर
ऑपरेशन करता आप।।
हरे-भरे वन और किसान का, मित्रों! मैं भगवान।
खुद मिट्टी में मिट्टी होकर, दूं सबको सम्मान।।

जहर मृदा का खुद पी-पीकर
फेंकू बाहर रोज
किस विधि पनपे शक्ति उर्वरा
करता नित मैं खोज।
दूषित जल हो विकृत मृदा हो
फिल्टर सदा करूं मैं
जड़-चेतन को खुश रखने हित
पल-पल पर रोज मरूं मैं।।
रस्सी से भी पतला लेकिन, हूँ कर्मठ वीर।
अपने श्रम से नित लिखता हूँ धरती की तकदीर।।
मेरा संरक्षण कर अगर कृषक
ले विवेक से काम
वैज्ञानिक खेती से पा सकता
वह मनचाहे दाम।
पारिस्थितिकी का सजग प्रहरी मैं
मृदा गुणता उद्‌गाता
सकल वनस्पति का मैं पोषक
मैं ही जीवन दाता।।
'पेस्टिसाइड' से मुझे बचाओ, मैं आऊं सबके काम।
वैज्ञानिक मैं, सखा कृषक का, अर्थवर्म है मेरा नाम।।

संपर्क सूत्र :
डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश' अभिव्यक्ति, 167, गढ़ विहार, देहरादून 248 005 (उत्तराखण्ड) [दूरभाष : 0135-2660414]